संस्कृत कैसे सीखें ?

How to Learn Sanskrit?

आकृति ठाकुर[1], योगेश शर्मा[2]

Aakriti Thakur[1], Yogesh Sharma[2]

[1] शोधच्छात्रा, संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

[2]सह आचार्य – कलाकोश विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

aakritithakur2@gmail.com, ycsharma2000@yahoo.co.in

https://doie.org/10.0121/VP.2025568057

प्रस्तुत लेख में संस्कृत के सम्यक् अवबोध एवं प्रयोग को समझने में सहायक प्रत्यय पर विचार किया जा रहा है। प्रत्यय अर्थबोध में वाक्य निर्मिति के प्रमुख घटक हैं। वाक्य की संरचना में अनेक भिन्न–भिन्न पदों का प्रयोग होता है। इनमें से कुछ पद कर्ता की भूमिका में होते हैं। कुछ पद संज्ञा, विशेषण आदि की भूमिका में होते हैं। कुछ पद क्रिया की भूमिका में होते हैं। प्रायशः सभी पदों की निर्मिति में प्रकृति–प्रत्यय की ही भूमिका होती है। प्रत्ययों में कुछ प्रत्यय धातु के साथ लगकर कर्ता, कर्म, करण, विशेषण, संज्ञा आदि का निर्माण करते हैं तो कुछ प्रत्यय क्रियापद का निर्माण करते हैं। पूर्णतः क्रियापद के रूप में प्रयुक्त होने वाले प्रत्यय 'तिङ्' होते हैं, जिनका उल्लेख प्रथम लेख में संक्षेप में किया जा चुका है। ये प्रत्यय कर्ता से सम्बद्ध क्रियापद के रूप में वचन और पुरुष के अनुसार प्रयुक्त होते हैं। तिङ् प्रत्ययों में से प्रथम नौ निम्नलिखित हैं–

पुरुष / वचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	तिप्	तस्	झि
मध्यमपुरुष	सिप्	थस्	थ
उत्तमपुरुष	मिप्	वस्	मस्

ये प्रत्यय परस्मैपद के रूप में प्रयुक्त होते हैं। इसके अन्तर्गत कर्ता की क्रिया का फल किसी अन्य को प्राप्त होता है। जैसे– सः ओदनं पचति। (वह भात पकाता है।)

उपर्युक्त वाक्य में भात पकाने का कार्य किसी अन्य के लिए किया जा रहा है, अर्थात् पके हुए चावलों को वह स्वयं नहीं खायेगा। इसी प्रकार अन्तिम नौ प्रत्यय निम्नलिखित हैं–

पुरुष / वचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	त	आताम्	झ
मध्यमपुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तमपुरुष	इट्	वहि	महिङ्

ये प्रत्यय आत्मनेपद के रूप में प्रयुक्त होते हैं। इसके अन्तर्गत कर्ता की क्रिया का फल स्वयं कर्ता को प्राप्त होता है। जैसे– सः ओदनं पचते। (वह अपने लिए भात पकाता है।)

उपर्युक्त वाक्य में भात पकाने का कार्य स्वयं के लिए किया जा रहा है अर्थात् पके हुए चावलों को वह स्वयं खायेगा।

उपर्युक्त 18 तिङ् प्रत्ययों से सभी दस लकारों (लट्, लङ्, लुङ्, लिट्, लुट्, लृट्, लृङ्, लोट्, विधिलिङ् एवं आशीर्लिङ्) की निर्मिति होती है अर्थात् किसी भी कर्ता के द्वारा की जाने वाली किसी भी क्रिया का किसी भी काल में अथवा किसी भाव में किया गया प्रयोग, इन 18 तिङ् प्रत्ययों से ही होता है। उदाहरण के लिए भू (होना) धातु के रूप देखें–

लकार	क्रियापद	अर्थ
लट्	भवति	होता है
लुट्	भविता	होने वाला है
लृट्	भविष्यति	होगा
लङ्	अभवत्	हुआ
लुङ्	अभूत्	हुआ
विधिलिङ्	भवेत्	होना चाहिए
लोट्	भवतु	हो
आशीर्लिङ्	भूयात्	हो
लिट्	बभूव	हुआ
लृङ्	अभविष्यत्	यदि ऐसा होता तो ऐसा होता

कर्ता की कैसी भी क्रियात्मक अभिव्यक्ति का आधार ये तिङ् प्रत्यय ही हैं। यहाँ तक की दो क्रियाओं का एकसाथ प्रयोग भी तिङ् प्रत्ययों से ही सम्भव होता है। जैसे– पिपठिषति (पढ़ने की इच्छा करता है)

इस क्रियापद में 'पढ़ना' और 'इच्छा करना' में दो क्रियाएँ हैं, जिसमें तिप् प्रत्यय के प्रयोग से अभिव्यक्ति की पूर्णता सम्पन्न होती है। इन तिङ् प्रत्ययों से बनने वाले वाच्य तीन प्रकार के होते हैं–

(1) कर्तृवाच्य (2) कर्मवाच्य (3) भाववाच्य

कर्तृवाच्य में सामान्यतः तिङ् प्रत्ययों के आत्मनेपदी एवं परस्मैपदी रूप देखने को मिलते हैं किन्तु कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में आत्मनेपद रूप ही देखने को मिलते हैं। संस्कृत में वाक्य रचना उपर्युक्त इन्हीं तीन वाच्यों में होती है।

कर्तृवाच्य में वाक्य रचना

जब वाक्य की क्रिया कर्ता को देखकर चलती है, अर्थात् उसके पुरुष और वचन कर्ता के अनुसार निर्धारित होते हैं, तब ऐसे वाक्य को कर्तृवाच्य का वाक्य कहा जाता है। यथा–

- बालकः ग्रन्थं पठति। (एक बालक ग्रन्थ पढ़ता है।)
- बालकौ ग्रन्थं पठतः। (दो बालक ग्रन्थ पढ़ते हैं।)
- बालकाः ग्रन्थं पठन्ति। (बहुत से बालक ग्रन्थ पढ़ते हैं।)

ध्यातव्य है कि कर्ता 'बालकः' प्रथमपुरुष एकवचन में है, तो क्रिया भी प्रथमपुरुष एकवचन में है। कर्ता 'बालकौ' प्रथमपुरुष द्विवचन में है, तो क्रिया भी प्रथमपुरुष द्विवचन में है। कर्ता 'बालकाः' प्रथमपुरुष बहुवचन

में है, तो क्रिया भी प्रथमपुरुष बहुवचन में है।

इसी प्रकार कर्तृवाच्य के अन्य उदाहरण निम्नलिखित हैं –

- अहं ग्रामं गच्छामि। (मैं गाँव जाता हूँ।)
- त्वं कथां शृणोषि। (तुम कथा सुनते हो।)
- सः असत्यं वदति। (वह असत्य बोलता है।)
- देवदत्तः प्रश्नं पृच्छति। (देवदत्त प्रश्न पूछता है।)
- माता भोजनं ददाति। (माता भोजन देती है।)
- पिता पुत्रं पालयति। (पिता पुत्र को पालता है।)

कर्तृवाच्य के वाक्यों में कर्ता में प्रथमा विभक्ति आती है। कर्म में द्वितीया विभक्ति आती है और क्रिया के पुरुष वचन कर्ता के अनुसार ही निर्धारित होते हैं अर्थात् कर्ता के उत्तमपुरुष होने पर क्रिया भी उत्तमपुरुष में होती है। कर्ता के मध्यमपुरुष होने पर क्रिया भी मध्यमपुरुष में होती है। कर्ता के प्रथमपुरुष होने पर क्रिया भी प्रथमपुरुष में होती है।

कर्मवाच्य में वाक्य रचना

जब वाक्य की क्रिया कर्म को देखकर चलती है अर्थात् उसके पुरुष और वचन कर्म के अनुसार निर्धारित होते हैं, तब ऐसे वाक्य को कर्मवाच्य का वाक्य कहा जाता है। चूँकि कर्मवाच्य की क्रिया कर्म को देखकर ही चलती है अर्थात् कर्म उत्तमपुरुष होने पर क्रिया उत्तमपुरुष में होती है। कर्म मध्यम पुरुष होने पर क्रिया मध्यमपुरुष में होती है। कर्म प्रथमपुरुष होने पर क्रिया प्रथमपुरुष में होती है। कर्मवाच्य और भाववाच्य की क्रिया का कर्ता से कोई सम्बन्ध नहीं होता है इसलिये कर्मवाच्य के वाक्यों के कर्ता में सदा तृतीया विभक्ति ही होती है। यथा–

- बालकेन ग्रन्थः पठ्यते। (बालक के द्वारा ग्रन्थ पढ़ा जाता है।)
- बालकेन ग्रन्थौ पठ्येते। (बालक के द्वारा दो ग्रन्थ पढ़े जाते हैं।)
- बालकेन ग्रन्थाः पठ्यन्ते। (बालक के द्वारा बहुत से ग्रन्थ पढ़े जाते हैं।)

ध्यातव्य है कि कर्म 'ग्रन्थः' प्रथमपुरुष एकवचन में है, तो क्रिया भी प्रथमपुरुष एकवचन में है। कर्म 'ग्रन्थौ' प्रथमपुरुष द्विवचन में है, तो क्रिया भी प्रथमपुरुष द्विवचन में है। कर्म 'ग्रन्थाः' प्रथमपुरुष बहुवचन में है, तो क्रिया भी प्रथमपुरुष बहुवचन में है। इसी प्रकार कर्मवाच्य के अन्य उदाहरण निम्नलिखित हैं –

- त्वया अहं दृश्ये। (तुम्हारे द्वारा मैं देखी जाती हूँ।)
- त्वं मां पश्यसि। (तुम मुझे देखते हो।)
- त्वं अस्मान् पश्यसि। (तुम हमें देखते हो।)
- त्वया वयं दृश्यामहे। (तुम्हारे द्वारा हम देखे जाते हैं।)
- अहं त्वां पश्यामि। (मैं तुमको देखता हूँ।)
- मया त्वं दृश्यसे। (मेरे द्वारा तुम देखे जाते हो।)
- वयं युष्मान् पश्यामः। (हम तुम सभी को देखते हैं।)

- अस्माभिः यूयं दृश्यध्वे। (हमारे द्वारा तुम सभी देखे जाते हो।)

यहाँ ध्यातव्य है कि कर्म उत्तमपुरुष एकवचन में है, तो क्रिया भी उत्तमपुरुष एकवचन में है। कर्म मध्यमपुरुष एकवचन में है, तो क्रिया भी मध्यमपुरुष एकवचन में है। इस प्रकार कर्मवाच्य के वाक्यों में कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है। कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है और क्रिया के पुरुष एवं वचन कर्म के अनुसार ही निर्धारित होते हैं।

उपरोक्त उदाहरणों में दृश धातु का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ 'देखना' है। दृश धातु का प्रयोग परस्मैपद एवं आत्मनेपद में शित् सर्वाधातुक एवं अर्धधातुक विधान के आधार पर भिन्न–भिन्न प्रकार से होता है। इसकी चर्चा पृथक रूप में विस्तार से आगे के अंकों में की जाएगी। यहां शीघ्र–अवबोध के लिए इतना भर आवश्यक है कि शित् सर्वधातुक प्रत्यय (परस्मैपद सर्वधातुक लकार – लट्, लोट्, लङ् विधिलिङ्) के सहयोग से निर्मित दृश धातु से क्रियापद 'पश्यति' आदि की तरह बनते हैं तथा अन्यत्र सभी स्थानों (भाववाची आत्मनेपद –दृश्यते आदि एवं अर्धधातुक – लिट्, लुङ् लृट्, आशीर्लिङ् लृङ्, लुट्) पर क्रियापद 'दृश्यते' आदि की तरह बनते हैं।

भाववाच्य में वाक्य रचना

जब वाक्य में कर्म नहीं होता है अथवा कर्म रहते हुए भी कहा नहीं जाता है, तब क्रिया का निर्धारण कर्म के अनुसार हो भी नहीं सकता। ऐसी स्थिति में कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है और कर्म के न होने के कारण क्रिया में पुरुष प्रथम एकवचन ही होता है। ऐसे वाक्यों को भाववाच्य के वाक्य कहते हैं। जैसे–

- देवदत्तेन आस्यते। (देवदत्त द्वारा बैठा जाता है।)
- बालकेन सुप्यते। (बालक द्वारा सोया जाता है।)
- त्वया स्थीयते। (तुम्हारे द्वारा बैठा जाता है।)
- मया जीव्यते। (मेरे द्वारा जीया जाता है।)
- बालकेन रुद्यते। (बालक द्वारा रोया जाता है।)
- मया हस्यते। (मेरे द्वारा हँसा जाता है।)

जब कर्म होते हुए भी उसे कहा नहीं जाता है, तब भी क्रिया को अकर्मक ही मानना चाहिए और इनके प्रयोग में भी क्रिया में पुरुष प्रथम एकवचन ही लगाना चाहिये। यथा–

क्रम सं.	**कर्तृवाच्य**	**कर्मवाच्य/ भाववाच्य**
1	देवदत्तः पठति। (देवदत्त पढ़ता है।)	देवदत्तेन पठ्यते। (देवदत्त द्वारा पढ़ा जाता है।)
2	कन्या पश्यति। (कन्या देखती है।)	कन्यया दृश्यते। (कन्या द्वारा देखा जाता है।)
3	बालकः खादति। (बालक खाता है।)	बालकेन खाद्यते। (बालक द्वारा खाया जाता है।)
4	त्वं पिबसि। (तुम पीते हो।)	त्वया पीयते। (तुम्हारे द्वारा पीया जाता है।)

उपर्युक्त तीन वाच्यों में वाक्य रचना हेतु हमें धातु(क्रिया) के स्वभाव को जानना भी आवश्यक है। धातु के सामान्यतः दो प्रकार होते हैं–

(1) सकर्मक धातु (2) अकर्मक धातु

हम जानते हैं कि जो क्रिया को करने वाला है, उसे कर्ता कहते हैं। कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसे चाहता है, उसे कर्म कहते हैं। जिन क्रियाओं का कर्म होता है, वे सकर्मक क्रियाएँ होती हैं। जिन क्रियाओं का कर्म नहीं होता, वे अकर्मक क्रियाएँ होती हैं। सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं को इस प्रकार पहचानें—

सकर्मक क्रिया– वाक्य में जो भी क्रिया हो, उसमें प्रश्न लगाइये— क्या ? अथवा किसको? उत्तर में जो मिले, उसे ही उस क्रिया का कर्म जानिये। जैसे—

- खाता है। क्या खाता है? रोटी। यही खाना क्रिया का कर्म है।
- धोता है। क्या धोता है? कपड़े। यही धोना क्रिया का कर्म है।
- देता है। क्या देता है? मुद्राएँ। यही देना क्रिया का कर्म है।
- लिखता है। क्या लिखता है? पत्र। यही लिखना क्रिया का कर्म है।

इस प्रकार जब 'क्या' का उत्तर मिल जाये तो जानिये कि वह क्रिया सकर्मक है।

अकर्मक क्रिया– अब अकर्मक क्रिया को देखें जैसे—

- रोता है। क्या रोता है? इसका कोई उत्तर नहीं है।
- सोता है। क्या सोता है? इसका कोई उत्तर नहीं है।
- उठता है। क्या उठता है? इसका कोई उत्तर नहीं है।
- नहाता है। क्या नहाता है? इसका कोई उत्तर नहीं है।

अतः जब 'क्या' का उत्तर न मिले तो जानिये कि वह क्रिया अकर्मक है। सामान्यतः अकर्मक धातु इस प्रकार हैं —

लज्जासत्तास्थितिजागरणं वृद्धिक्षयभयजीवितमरणम्।
शयनक्रीडारुचिदीप्त्यर्थ धातुगणं तमकर्मकमाहुः।।

लज्जते (लज्जा करता है), भवति (होता है), तिष्ठति (बैठता है), जागर्ति (जागता है), वर्धते (बढ़ता है), क्षीयते (क्षीण होता है), बिभेति (डरता है), जीवति (जीता है), म्रियते (मरता है), शेते (सोता है), क्रीडते (खेलता है), रोचते (पसन्द करता है), दीप्यते (प्रकाशित होता है) आदि धातु और इनके समानार्थक सारे धातु अकर्मक होते हैं।

अविवक्षितकर्मक धातु– जब कर्म होते हुए भी उसे कहा नहीं जाता है, तब भी क्रिया को अकर्मक ही मानना चाहिये। जैसे— देवदत्तः पठति। बालः खादति। कन्या पश्यति, आदि क्रियाएँ सकर्मक हैं, किन्तु इन वाक्यों में उनका कर्म कहा नहीं गया, अतः इन्हें अकर्मक ही माना जाना चाहिये और इनके प्रयोग में भी वाक्य रचना वैसे ही करना चाहिये, जैसी अकर्मक धातुओं के प्रयोग में की जाती है।

तिङ् प्रत्ययों के अतिरिक्त अतिङ् (कृत् आदि) प्रत्ययों की व्यवस्था भी संस्कृत व्याकरण में देखने को मिलती है। यद्यपि वाक्य रचना में सामान्यतः क्रियापद के रूप में तिङन्त पद ही प्रयुक्त होते हैं, फिर भी तिङ् प्रत्ययों से भिन्न अतिङ् (कृत्) प्रत्यय भी क्रियापद के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे— यत्, क्यप्, ण्यत्, तव्यत्, अनीयर् क्त एवं क्तवतु आदि। इनमें से क्त एवं क्तवतु प्रत्यय भूतकालिक क्रिया का बोध कराने में प्रयुक्त होते

हैं। दोनों में एक ही भेद है कि 'क्त' प्रत्यय का प्रयोग कर्मवाच्य एवं भाववाच्य के रूप में किया जाता है। जबकि 'क्तवतु' प्रत्यय का प्रयोग कर्तृवाच्य में किया जाता है। जैसे–

मया पुस्तकं पठितम्। (मेरे द्वारा पुस्तक पढ़ी गयी।)

यह कर्मवाच्य का वाक्य है। इसमें क्रियापद 'पठितम्' है। पठितम् का प्रयोग कर्म (पुस्तकं) के अनुसार किया गया है। इस वाक्य में क्रियापद कर्म के अनुसार है। कर्ता यहाँ अनुक्त है। इसलिए इसमें तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया गया है। इसीप्रकार क्तवतु प्रत्यय कर्तृवाच्य में प्रयुक्त होता है। जैसे–

सः पुस्तकं पठितवान्। (उसने पुस्तक पढ़ी।)

इस वाक्य में कर्ता प्रधान (उक्त) है, अतः क्रिया (पठितवान्) का प्रयोग सः (कर्ता) के अनुसार किया गया है। इस वाक्य में 'पुस्तकं' कर्म है। कर्तृवाच्य में कर्म अनुक्त (अप्रधान) होता है।

क्त और क्तवतु के अतिरिक्त शतृ और शानच् भी लट् लकार के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं। जैसे–

सः विकसत् पुष्पं पश्यति। (वह खिलते हुए पुष्प को देखता है।)

इस वाक्य में वि+कस्+शतृ प्रत्यय का प्रयोग है।

शतृ और शानच् प्रत्यय कर्म आदि के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

इस प्रकार क्रियापद के रूप में तिङ् के अतिरिक्त कृत प्रत्ययों का भी प्रयोग होता है। कृत प्रत्ययों का प्रयोग क्रियापद के अतिरिक्त कर्ता, करण, संज्ञा, भाव, विशेषणवाची शब्दों की निर्मिति में भी होता है, जिनके उदाहरण इस प्रकार हैं–

क्रम संख्या	शब्द	प्रत्यय	अर्थ	पद
1	पातव्यम्	तव्य	पीने योग्य	क्रिया
2	जयनीयः	अनीयर्	जीतने योग्य	क्रिया
3	गेयम्	यत्	गाने योग्य	क्रिया
4	स्तुत्यः	क्यप्	स्तुति योग्य	क्रिया
5	पाव्यः	ण्यत्	पवित्र करने लायक	क्रिया
6	धावितः	क्त	दौड़ा	क्रिया
7	लिखितवान्/लिखितवती	क्तवतु	लिखा	क्रिया
8	उक्तः	क्त	कहा	क्रिया
9	चोरयमाणः	शानच्	चुराता हुआ	विशेषण
10	क्रीडन्	शतृ	खेलता हुआ	विशेषण
11	भवनम्	ल्युट्	होना	संज्ञा
12	कारकः	ण्वुल	करने वाला	संज्ञा/विशेषण
13	दाता/दात्री	तृच्	देने वाला/देने वाली	संज्ञा
14	ज्ञातुम्	तुमुन्	जानने के लिए	क्रिया(अव्यय)

15	त्यक्त्वा	क्त्वा	त्यागकर	क्रिया(अव्यय)
16	विलोक्य	ल्यप्	देखकर	क्रिया(अव्यय)
17	योगः	घञ्	योग	संज्ञा
18	जनता	तल्	जनता	संज्ञा
19	शक्तिमान्	मतुप्	शक्ति से युक्त	विशेषण (पुल्लिंग)
20	धृतिमती	मतुप्	धैर्य से युक्त	विशेषण(स्त्रीलिंग)

धातु के साथ लगने वाले प्रत्ययों में सनादि प्रत्यय भी होते हैं जिनका प्रयोग क्रिया के मूल भाव के अतिरिक्त अन्य अर्थ के बोधन में भी किया जाता है।

जैसे– णिच् प्रत्यय। इसका प्रयोग प्रेरणार्थक क्रियाओं में किया जाता है। उदाहरणार्थ–सः पुस्तकं पाठयति। (वह पुस्तक पढ़ाता है।)

इस वाक्य में पाठयति पद णिच् प्रत्यय से बना है। इसके कारण 'पठ्' धातु का मूल अर्थ पढ़ना 'पढ़ाने' में परिवर्तित हो गया है, जो प्रेरणार्थक है। इसका तात्पर्य है– वह पुस्तक पढ़ाता है अर्थात् वह पुस्तक पढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

इस प्रकार प्रस्तुत लेख में धातु के साथ लगने वाले प्रत्ययों के स्वरूप एवं प्रयोग पर विचार किया गया है। इसी प्रकार आगामी लेख में तद्धित एवं स्त्री प्रत्ययों के स्वरूप एवं प्रयोग पर विचार किया जाएगा।

अनुवाद

1. पाचकः ओदनं पचति/पचते। (पाचक भात पकाता है।)
2. श्रीमान् राजकिशोरः पुस्तकं पठति। (श्रीमान् राजकिशोर पुस्तक पढ़ते हैं।)
3. राधा संस्कृतव्याकरणं पिपठिषति। (राधा संस्कृत व्याकरण पढ़ने की इच्छा करती है।)
4. एतत् वस्त्रं धातव्यम् अस्ति। (यह वस्त्र धारण करने योग्य है।)
5. राष्ट्रीयसंग्रहालये दर्शनीया प्रदर्शनी आसीत्। (राष्ट्रीय संग्रहालय में देखने योग्य प्रदर्शनी थी।)
6. वयं छात्राः नव्यं वस्तुं जिज्ञासितुं सदा तत्पराः तिष्ठामः। (हम छात्र नई वस्तु जानने हेतु तत्पर रहते हैं।)
7. यानि कार्याणि कर्तुम् अहम् अदां तानि शीघ्रं साधय। (जो कार्य मैंने करने को दिए हैं, उन्हें शीघ्र करो।)
8. भवान् किं भवितुं वाञ्छति? (आप क्या बनना चाहते हैं?)
9. मया एतानि पुस्तकानि कस्मै देयानि? (मेरे द्वारा ये पुस्तकें किसे देनी हैं?)
10. महर्षिदयानन्दः सर्वाणि शास्त्राणि पठितवान्। (महर्षि दयानन्द ने सारे शास्त्र पढ़े।)
11. गृहाणि गच्छन्तीः बालिकाः प्रतिभा अकथयत्। (घर जाती हुई लड़कियों ने प्रतिभा से कहा।)
12. मम मित्राणि चित्तौड़दुर्गं न दृष्टवन्तः। (मेरे मित्रों ने चित्तौड़ का किला नहीं देखा।)
13. माता युष्मान् किं पृष्टवती? (माता ने तुमसे क्या पूछा?)
14. तस्मै मम वार्ताः रुचिताः । (उसे मेरी बातें अच्छी लगी।)
15. वयं कष्टानि सहितुं/सोढुं सज्जाः स्मः परं नष्टुं कदापि नैव। (हम कष्ट सहने को तैयार हैं, पर नष्ट होने को कभी नहीं।)